SANSKRUTI INTERNATIONAL
MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL
Journal homepage: http://www.simrj.org.in *Journal UOI: 1.01/simrj*

राजस्थान राज्य में जल प्रबन्धन
(झुन्झुनू जिले के विशेष संदर्भ में)

अंकिता जांगिड़
शोधार्थी भूगोल विभाग जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर,

सारांश :

जल प्रबन्धन बहुत महत्वपूर्ण बिन्दू हैं। लेकिन उस स्थान पर जल का संचयन करना या प्रबन्धन करना अत्यधिक आवश्यक है जहां लोग सुखे से घिरे रहते है जैसे राजस्थान राज्य। राजस्थान में जल प्रबन्धन की अत्यधिक आवश्यक है क्योंकि यहां वर्षा का स्तर बहुत कम 25–80°C के लगभग है और भू–जल स्तर में भी निरन्तर गिरावट आ रही है। अतः ऐसे स्थान पर जहां जल संकट गहराता जा रहा है वहां जो जल उपलब्ध है या थोड़ा बहुत वर्षा के जल को संचयन कर उसका प्रबन्धन करना बहुत जरूरी है।के झुन्झुनू जिले में भूमिगत जल का उपयोग अत्यधिक किया जाता है। इस जल का उपयोग अन्धाधून्ध हो रहा है। अतः भूमिगत जल में निरन्तर गिरावट आ रही है और जल की समस्या बढ़ रही है। झुंन्झुनू जिले में नदियों की भी कमी है। इस क्षेत्र में कांतली नामक नदी प्रवाहित होती है जो वर्षा ऋतु में ही प्रवाहित होती है।यदि हम उचित व्यवस्था करें तो इस नदी के पानी को बचा सकते हैं। उचित जल प्रबन्धन हो तो कम जल वाले स्थान पर हम बाढ़ वाला पानी पहुंचाकर कुछ हद तक समस्या का हल कर सकते हैं। अतः जल प्रबन्धन एक चुनौति बन गया है जो हमारे आज और कल दोनों के लिए जरूरी है।

key words : जल प्रबन्धन , कांतली नामक

परिचय :

दुनिया की बड़ी चर्चाओं में पानी और पर्यावरण दो प्रमुख मुद्दे हैं। वैसे जल भी पर्यावरण का ही हिस्सा है पर अब यह सालभर चर्चाओं में रहता है। गर्मी आते ही देश–दुनिया में पानी के लिए त्राही–त्राही मच जाती है और इसके जाते ही पानी से त्राही मच जाती है। बदलती जीवनशैली और

बदलते शहरीकरण के कारण पानी की मांग लगातार बढ़ रही है। भू–जल अतिदोहन के कारण पानी की कमी निरन्तर बढ़ रही है।

अतः जीवन को सुरक्षित रखना है तो वर्षा एवं भूमिगत जल को संरक्षित रखना होगा। बहते जल को संचित करना होगा। पानी के दुरूपयोग को रोकना होगा वरना जीवन खतरे में पड़ जायेगा।

जल प्रबन्धन :

जल प्रबन्धन कम जल वाले स्थान पर अधिक जल वाले स्थान से पहुंचाकर जल की समस्या को कम करना है या जहां जल की अत्यधिक समस्या है वहां उपलब्ध उस जल का उपयोग उचित ढंग से करना है जिससे अधिक समय तक उस जल का उपयोग कर सके। अतः यह प्रबन्धन मानव विकास के लिए अति–आवश्यक है। वर्तमान स्थिति को देखते हुए तो जल प्रबन्धन अति आवश्यक हो गया है।

जल प्रबन्धन की आवश्यकता :

अनुमानों से संकेत मिलता है कि लगभग 4 अरब लोग यानि विश्व की दो–तिहाई जनसंख्या हर वर्ष कम से कम एक महीने पानी की जबरदस्त किल्लत से जूझती है। पानी की कमी के कारण फसल की पैदावार कम हो सकती है, जिससे खाद्य की कमी हो सकती है, किमते बढ़ सकती है और भूखों की तादाद भी बढ़ सकती है। अतः हमें जल प्रबन्धन की बहुत ज्यादा आवश्यकता है। वर्षा का जल भी प्रतिवर्ष ऐसे ही बह जाता है उसका कोई उपयोग नहीं हो पाता। अतः वर्षा जल का संचयन करके भी हम वर्षा जल का उपयोग कर सकते हैं। अतः जल प्रबन्धन की आवश्यकता निम्न कारणों से होती हैं–

1. भू–जल भण्डारण में वृद्धि तथा जल स्तर में गिरावट पर नियंत्रण करने हेतु।
2. जल की उपलब्धता बढ़ाने हेतु।
3. भू–जल प्रदुषण को कम करने के लिए।
4. भू–जल के अति दोहन के कारण खाली हुए जलभृतों में पुनः जल भरने के लिए।
5. भू–जल की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए।
6. भविष्य में उपयोग के लिए अधिशेष जल को संचित करने के लिए।
7. बाढ़ जैसी आपदा को कम करने के लिए।
8. अत्यधिक जरूरत के स्थान पर वर्षा जल का संचयन करने के लिए।
9. सुखे व अकाल के प्रभाव को कम करने के लिए।

राजस्थान राज्य में जल प्रबन्धन :

जल प्रबन्धन बहुत महत्वपूर्ण बिन्दू हैं। लेकिन उस स्थान पर जल का संचयन करना या प्रबन्धन करना अत्यधिक आवश्यक है जहां लोग सुखे से घिरे रहते है जैसे राजस्थान राज्य। राजस्थान